बन्दर की अक़्ल

अफ्रीकी लोककथा

बन्दर की अक़ल

अफ्रीकी लोककथा

बारिश का मौसम आ रहा था.

बंदर को अब जल्दी एक नया घर बनाना था.

"मेरी कौन मदद करेगा?" उसने पूछा.
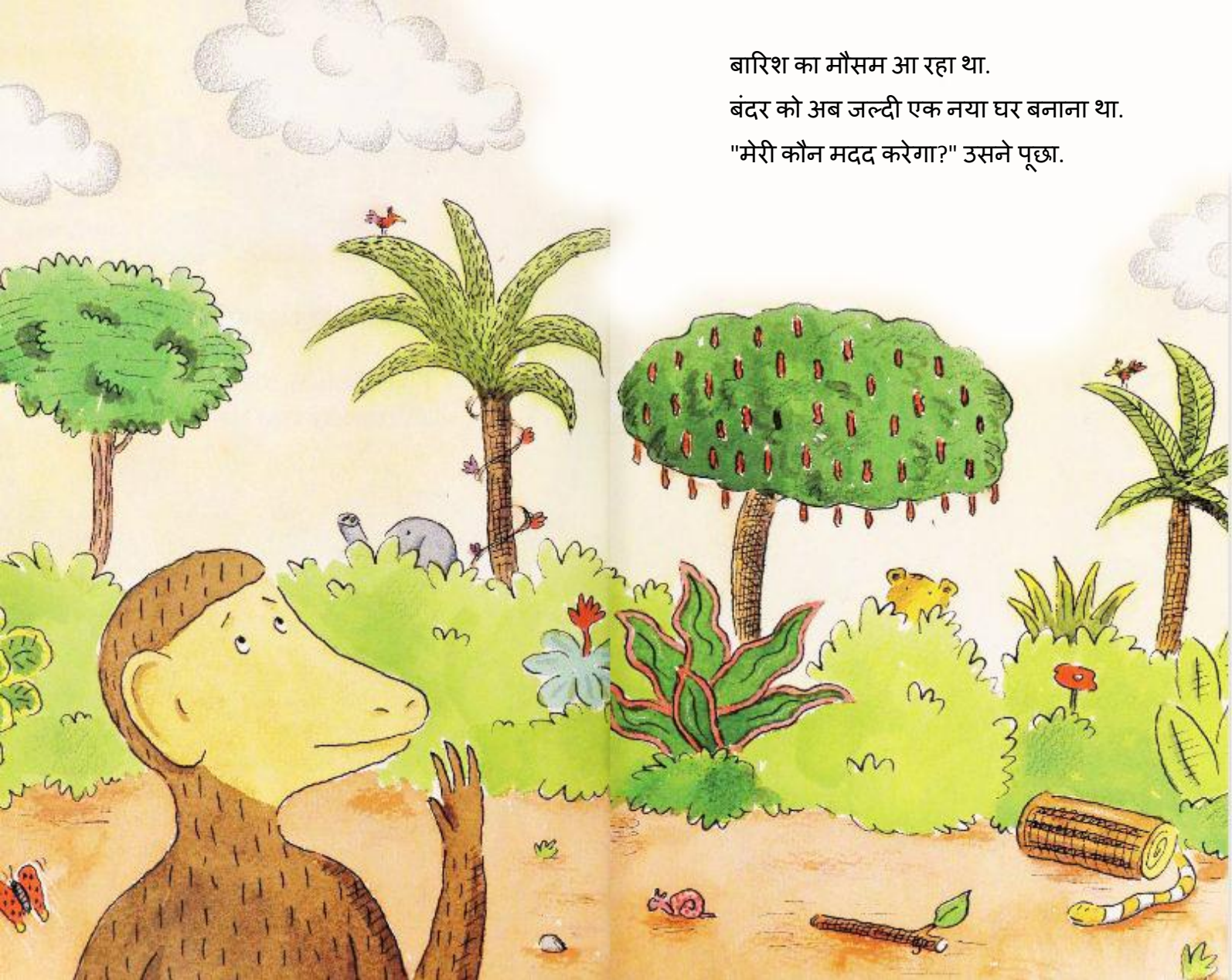
"मैं मदद करना चाहती हूँ," शेरनी ने कहा.
"लेकिन मुझे शिकार पर जाना है.
मेरे बच्चे भूखे हैं."

"मैं मदद करना चाहता हूँ," हाथी ने कहा.
"लेकिन मुझे झुंड के लिए पानी का एक
नया ताल ढूंढना है."

"मैं मदद करना चाहता हूँ,"
बूढ़े जिराफ ने कहा. "लेकिन
मेरे खुर में चोट लगी है और
मेरे लिए चलना मुश्किल है."
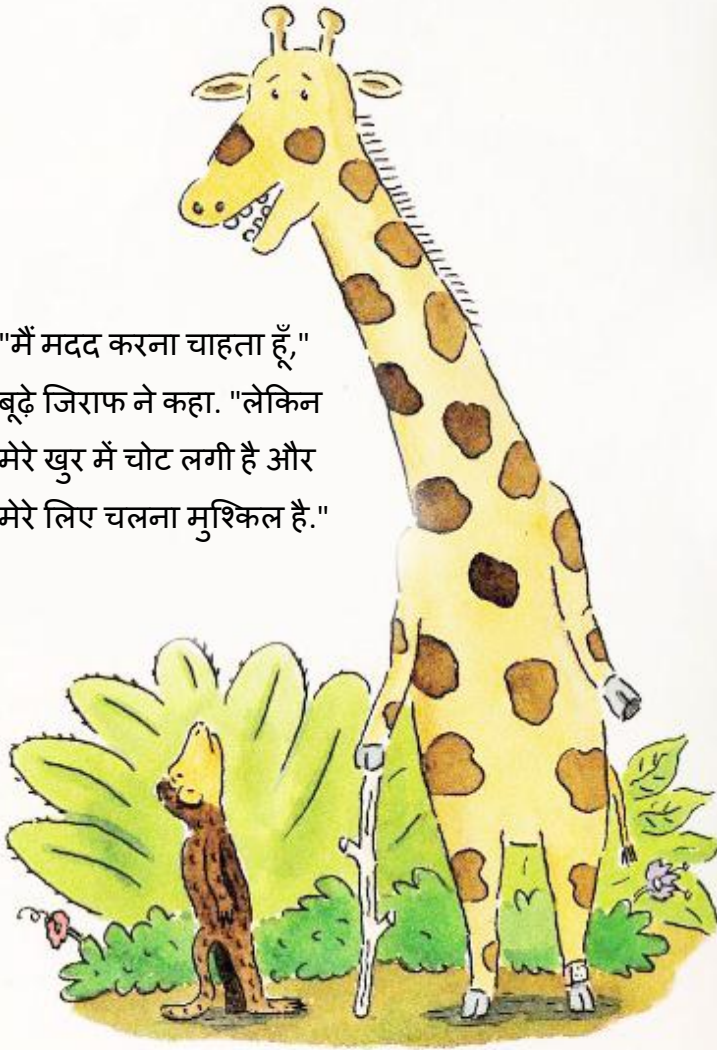
"फिर मुझे अपना घर अकेले बनाना होगा,"
बन्दर ने कहा. और उसने वही किया.
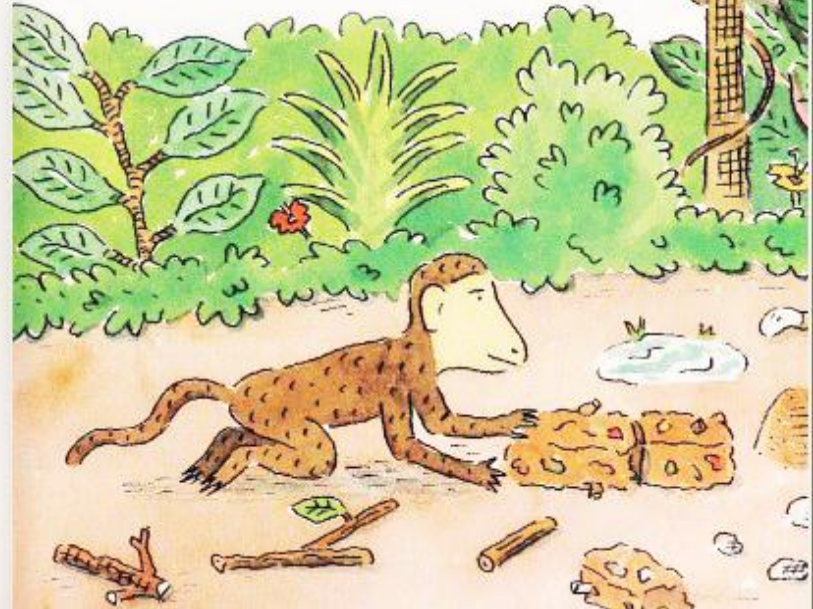
"डी-डूडल-डी-डम!" बंदर ने किसी को गाते हुए सुना.
लकड़बग्घा झाड़ियों से बाहर कूदकर आया.
"मैं देख रहा हूँ कि तुम एक नया घर बना रहे हो,"
उसने कहा. "मैं तुम्हारी ज़रूर मदद करूँगा."

लेकिन लकड़बग्घा काफी चालबाज़ था.
बंदर को उस पर बिल्कुल भरोसा नहीं था.
बंदर ने लकड़बग्घे से कहा, "नहीं, मैं अपना
घर अकेले ही बनाऊंगा."
लकड़बग्घे ने कहा, "चलो, ठीक है."
लेकिन जाने से पहले लकड़बग्घे ने
बंदर का एक केला चुरा लिया.
वो झट से केला खा गया.

बंदर सारा दिन अपना घर बनाता रहा.
लेकिन काम बहुत आगे नहीं बढ़ा.

"मेरा केला खाना बंद करो!"
बंदर चिल्लाया. "और जाओ यहाँ से!"
"अरे! ही-हो!" लकड़बग्घा हंसने लगा.
"वो केला कितना अच्छा था!"
तब लकड़बग्घा नाचते-नाचते
वहां से दूर गया.
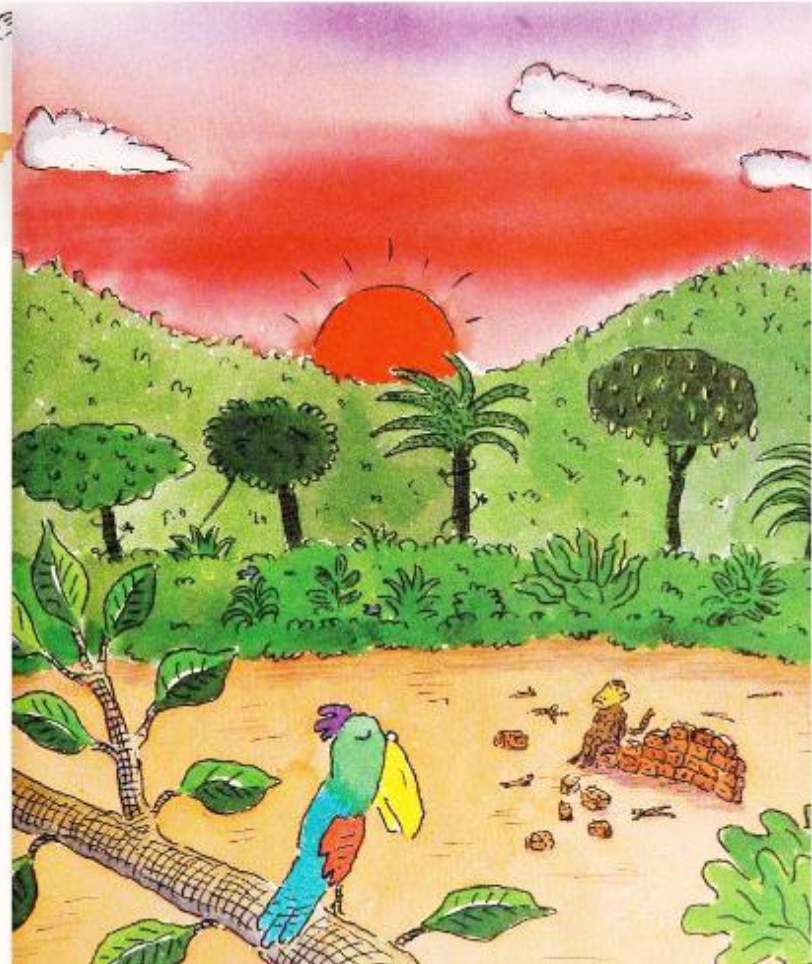
उस रात एक खूबसूरत जीव
झाड़ियों से बाहर आया.
वो सुंदर गा रहा था.
"डी-डूडल-डी-डम!"
"मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हूं
जो इस तरह से गाता है," बंदर ने सोचा.
“लेकिन कौन?”

सुंदर जीव ने बंदर के घर को देखा.
"क्या तुम्हें मदद की ज़रूरत है," उसने कहा.
'मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करूँगा. लेकिन उससे
पहले तुम्हें मेरे लिए एक बड़ा बर्तन शोरबा
बनाना होगा."
बंदर को मदद की सख्त ज़रूरत थी.
"ठीक है," उसने कहा. "मैं आपकी बात मानूंगा.
आप कल सुबह वापस आना."
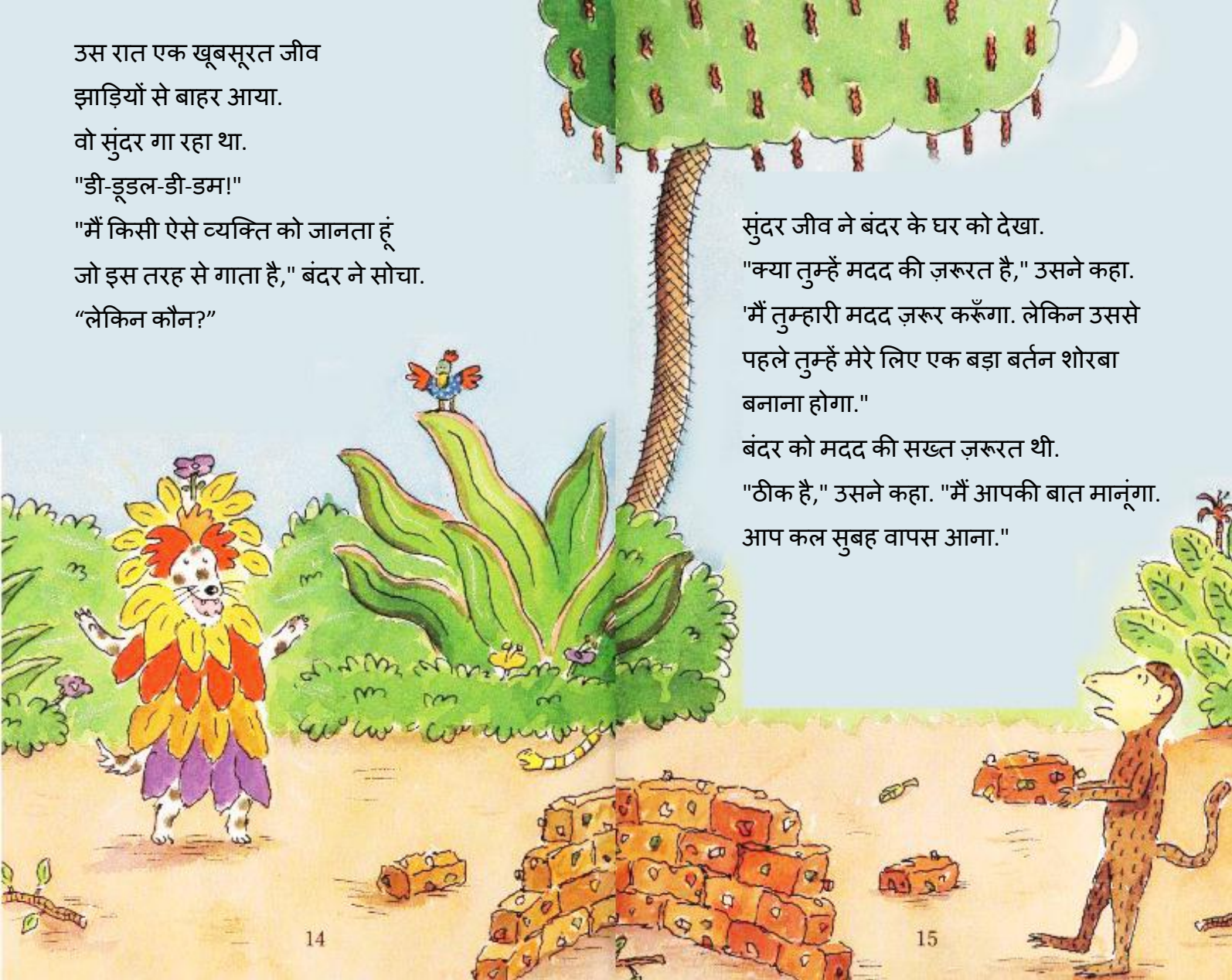
अगली सुबह बंदर ने एक बड़े बर्तन में
शोरबा बनाया. फिर एक बदसूरत राक्षस
झाड़ियों से बाहर कूदकर आया.

बंदर डर से कांपने लगा. वो एक पेड़ के
पीछे भाग गया. उसने बदसूरत राक्षस
को पूरा शोरबा खाते हुए देखा.
"क्या मैं किसी जीव को जानता हूं जो
उस तरह से खाता है," बंदर-बंदर सोचा.
"लेकिन कौन?"
फिर बदसूरत राक्षस
वापस झाड़ियों में भाग गया.
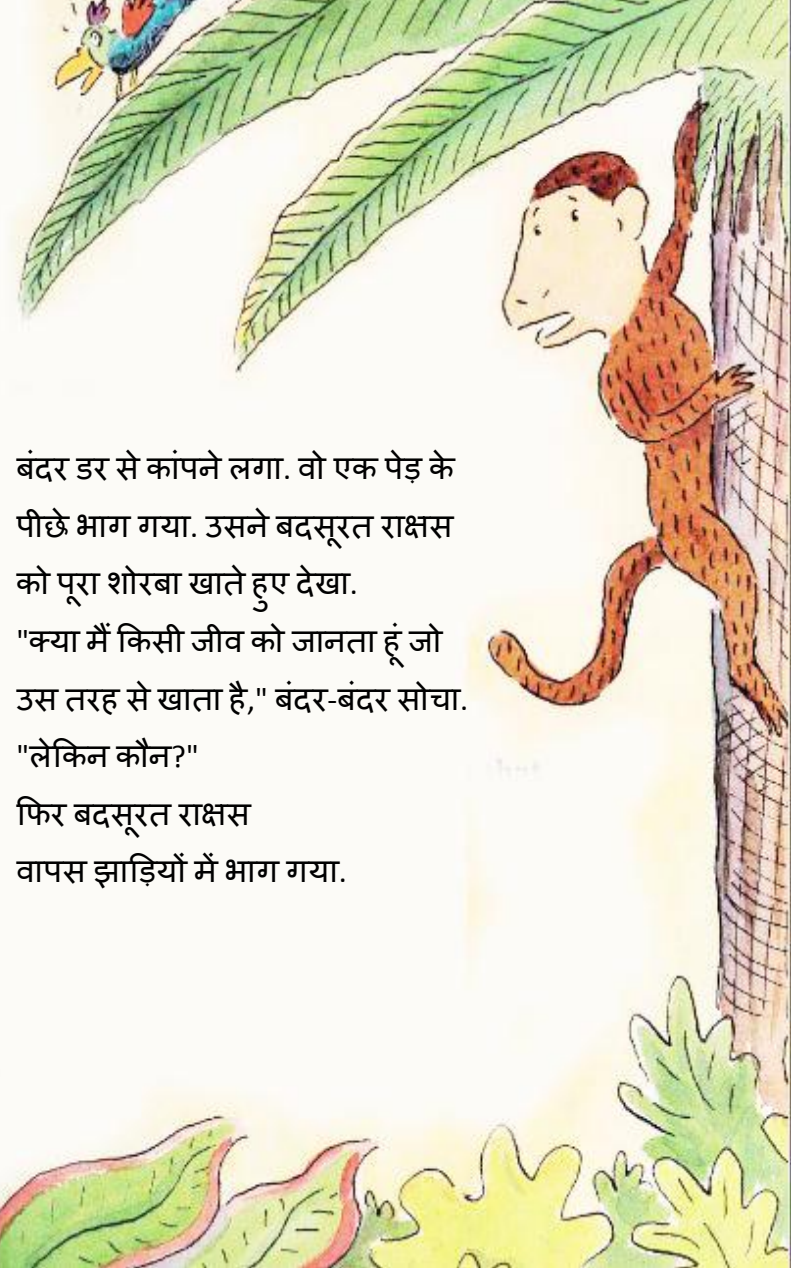
थोड़ी देर बाद सुंदर जीव वापस आ गया. उसने खाली बर्तन में झाँका.
"मेरा शोरबा कहाँ है?" उसने पूछा.
बन्दर ने उसे बदसूरत राक्षस के बारे में बताया.
"यह बहुत बुरा हुआ," सुंदर प्राणी ने कहा. "लेकिन क्योंकि मैंने तुम्हारा शोरबा नहीं पिया, इसलिए मैं तुम्हारा काम भी नहीं करूंगा."

"कृपया," बंदर ने कहा. "आप कल वापस आना. मैं एक और बर्तन शोरबा बनाऊंगा."
फिर उस सुंदर जीव ने एक नाच किया.
"क्या मैं किसी को जानता हूं जो इस तरह से नाचता है," बंदर ने सोचा.
"लेकिन कौन?"

बंदर ने अपनी बात रखी.
अगले दिन उसने फिर
एक बड़े बर्तन में शोरबा बनाया.
फिर बंदर ने झाड़ियों में शोर सुना.
क्या वो सुंदर प्राणी था? नहीं!
वो फिर से बदसूरत राक्षस था!

बंदर एक तने के पीछे छिप गया.
बदसूरत राक्षस पूरा शोरबा खा गया.
"अरे! ही-हो!" वह भागते हुए हँसा.
"मैं किसी को जानता हूं
जो बिल्कुल उस तरह से हंसता है,"
बंदर-बंदर ने सोचा.
"लेकिन कौन?"
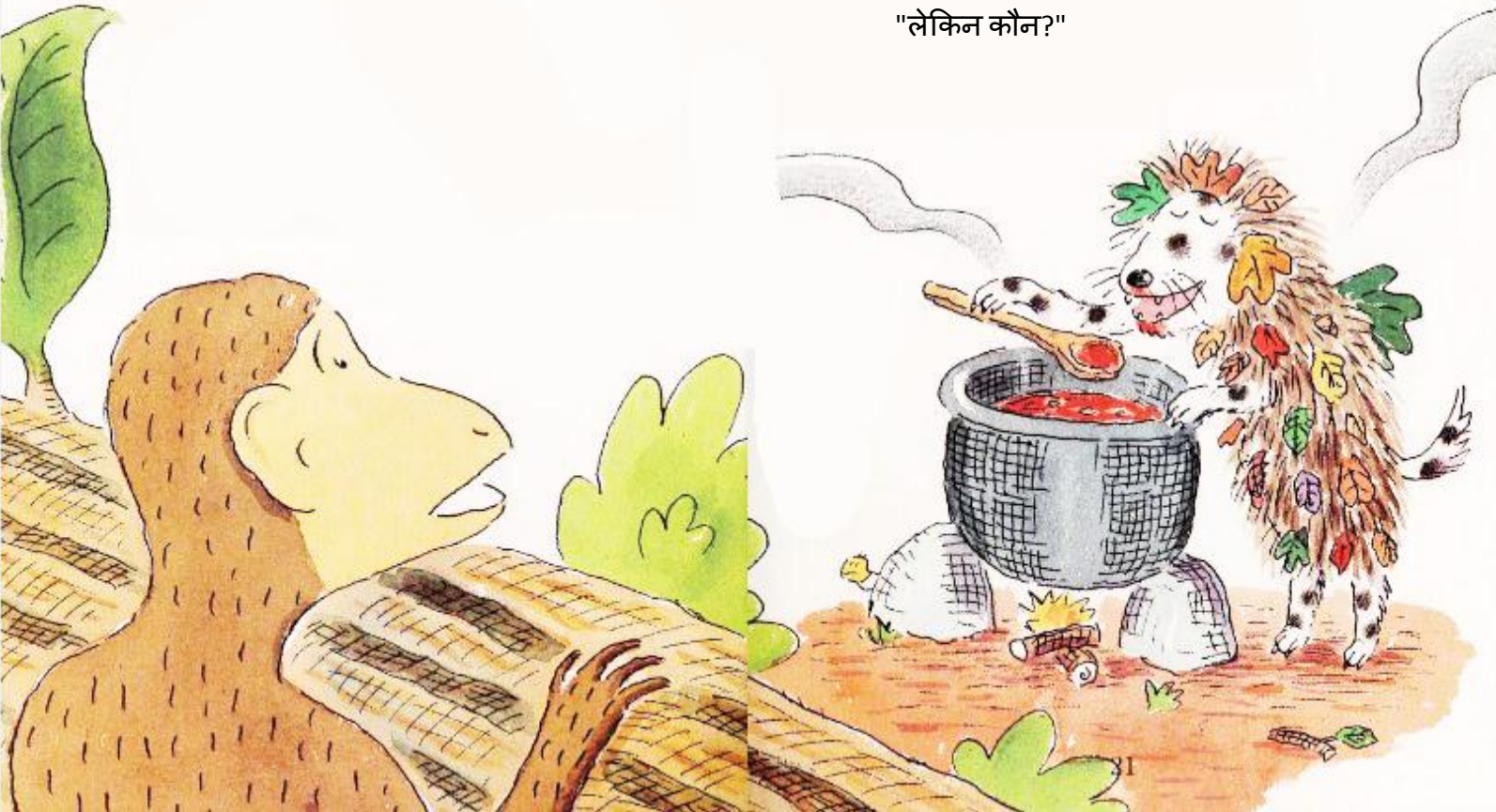
फिर कुछ ही देर में सुंदर जीव वापस आया.
एक बार उसने फिर से बर्तन को खाली देखा.
"यह बहुत बुरी बात है," सुंदर प्राणी ने कहा.
"क्योंकि मैंने तुम्हारा शोरबा नहीं खाया है
इसलिए मैं तुम्हारा काम भी नहीं करूंगा.
लेकिन मैं कल सुबह फिर से आऊंगा."

तभी बन्दर ने उस सुंदर जीव के
चेहरे पर थोड़ा शोरबा लगा हुआ देखा.
"उसे, शोरबा कैसे मिला?"
बंदर ने खुद से कहा.
फिर वो पूरी बात समझ गया.

इस बार बन्दर उस सुंदर जीव
के पीछे-पीछे नदी तक गया.

सुंदर जीव ने चारों ओर देखा.
फिर उसने अपने पंख निकाल डाले.
वो लकड़बग्घा ही था!
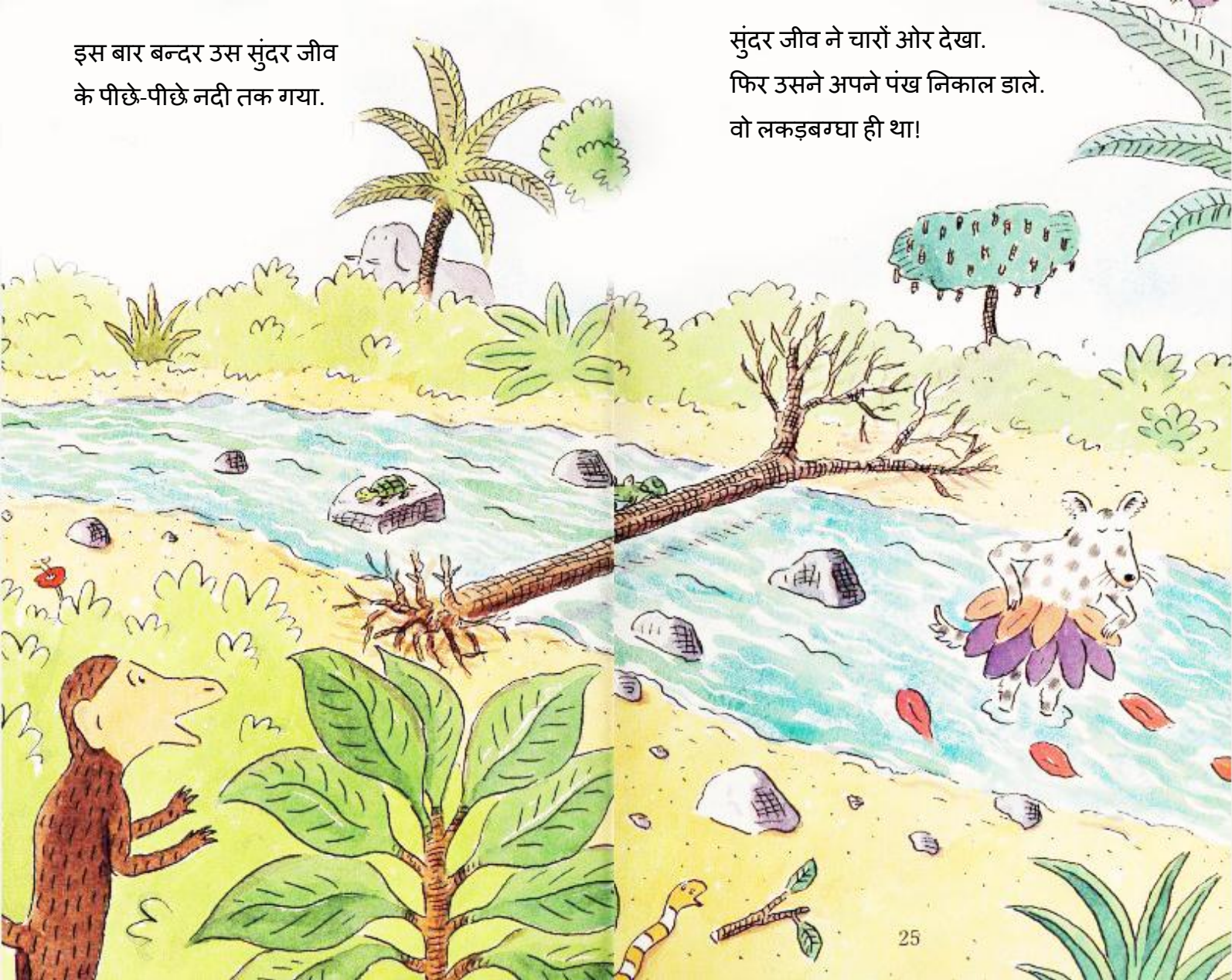
बंदर पूरी रात इंतजार करता रहा.
अगली सुबह उसने लकड़बग्घे को खुद
पर मिट्टी और पत्तियां पोतते
हुए देखा.
तो लकड़बग्घा ही बदसूरत राक्षस था!
"मैं बहुत चालाक हूँ!" लकड़बग्घे ने
हंसते हुए कहा.
"हे-हे-हो! मैं बंदर के साथ फिर
से छल करने के लिए इंतजार
नहीं कर सकता."

जब बदसूरत राक्षस झाड़ियों से बाहर निकला,
तो शोरबा एक बर्तन में पक रहा था
और उबल रहा था.
लेकिन बन्दर वहां नहीं था.
एक बहुत पतला ज़ेबरा,
बर्तन में शोरबे को हिला रहा था.
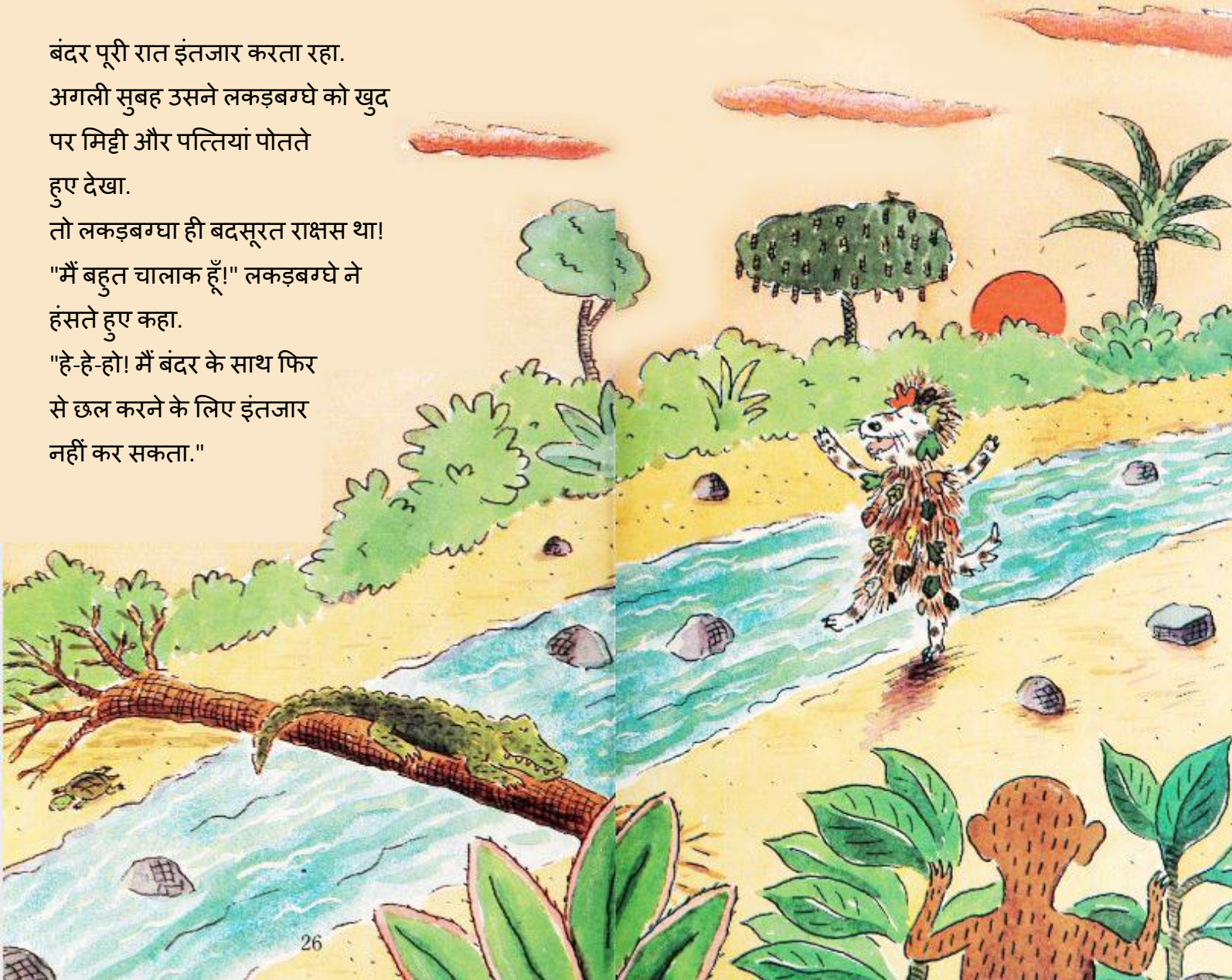
"तो यह है लकड़बग्घे का सोच!"
बंदर ने खुद से कहा.
फिर लकड़बग्घे के देखने से पहले
ही बन्दर वहां से वह भाग गया.

"भागो! चले जाओ!"
बदसूरत राक्षस चिल्लाया.

"तुम यहाँ से चले जाओ!" ज़ेबरा वापस चिल्लाया. "तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते. तुम बदसूरत राक्षस नहीं हो. तुम लकड़बग्घे हो!"

बदसूरत राक्षस ने पत्तियों और कीचड़ को उतार दिया.

"तुमने बिल्कुल ठीक समझा! ही-ही-हो!" लकड़बग्घा हंस पड़ा. "मैंने तुम्हें बेवकूफ नहीं बनाया, लेकिन मैंने उस मूर्ख बंदर को ज़रूर बेवकूफ बनाया."

लकड़बग्घे ने बड़े बर्तन के शोरबे को सूंघा. "वैसे वो बंदर कहाँ हैं?"

ज़ेबरा ने उसे देखा और कहा, "वह अपने घर के लिए लकड़ी और शाखें लेने गया है. और अगर बंदर को तुम्हारी चाल के बारे में पता चल गया, तो वह पागल हो जाएगा. और फिर वह तुम पर जादू-टोना चला देगा."
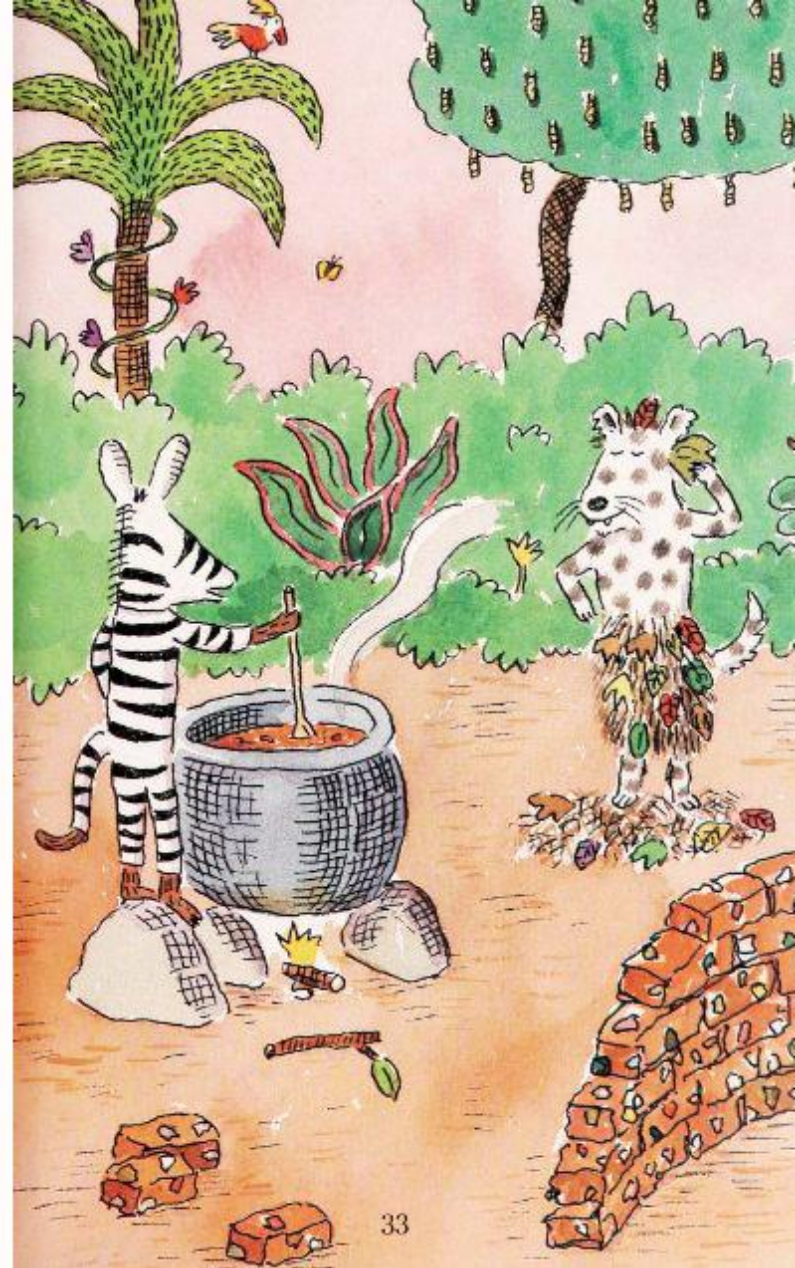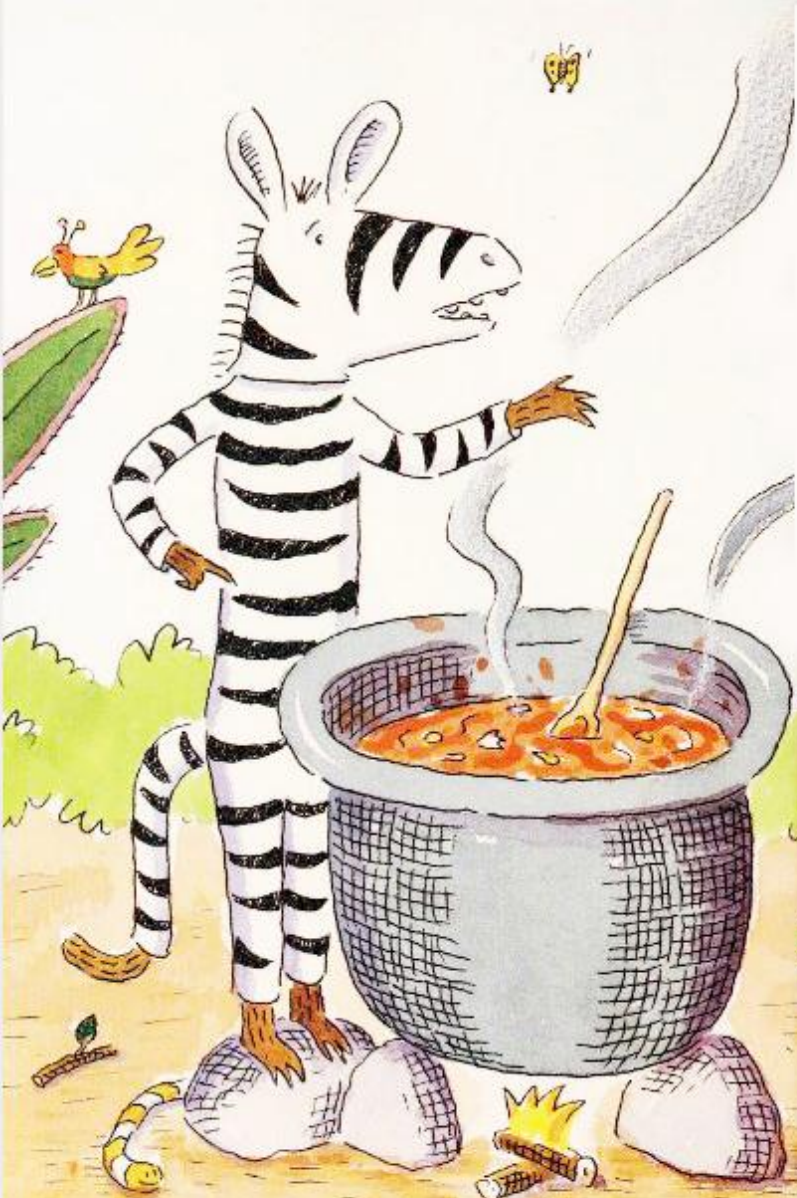
यह सुनकर लकड़बग्घा बैठ गया.
वो थोड़ा डरा हुआ लग रहा था.
ज़ेबरा ने कहा, "मैं कभी हट्टा-कट्टा
और मजबूत हुआ करता था.
लेकिन जब मैंने बंदर को परेशान
किया, तब उसने मुझ पर एक जादू
चला दिया. और अब देखो!
मैं एकदम पतला हो गया हूँ."
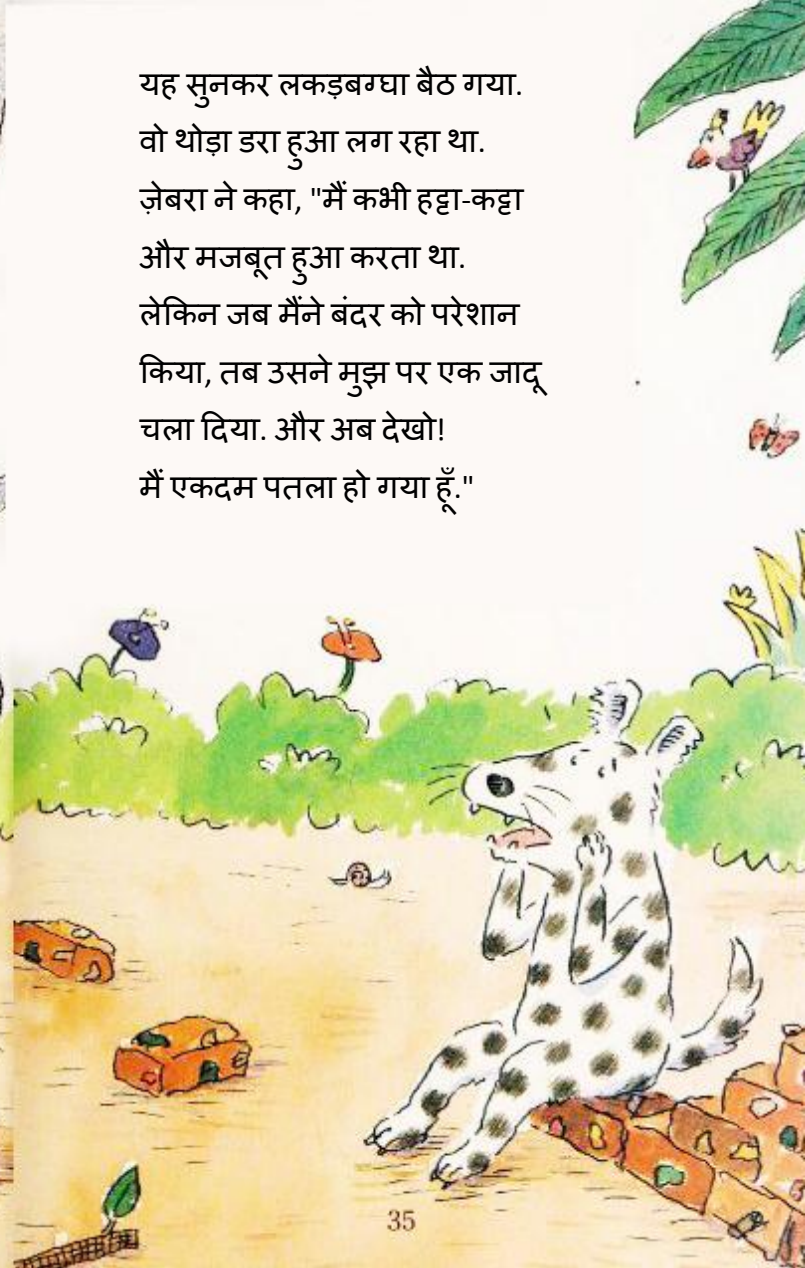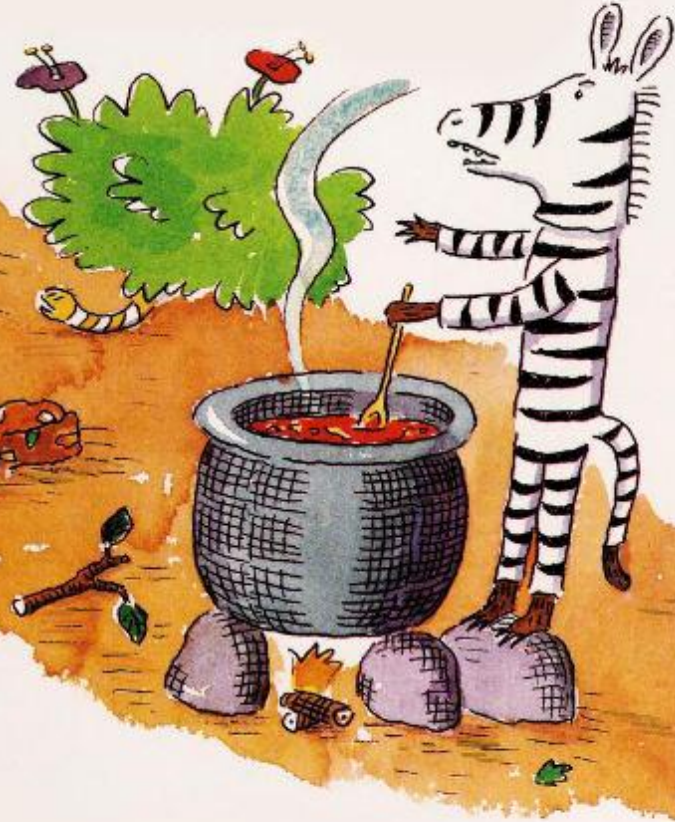
पतले ज़ेबरा ने शोरबे को हिलाया. "तुमने बंदर से नया घर बनाने में मदद करने का वादा किया था. अगर तुमने वो नहीं किया तो बन्दर बहुत गुस्सा होगा."

यह सुनकर लकड़बग्घा उछल पड़ा. वह वास्तव में डर गया था. "अरे नहीं!" लकड़बग्घा रो पड़ा, "बताओ, मैं खुद को कैसे बचा सकता हूं?"
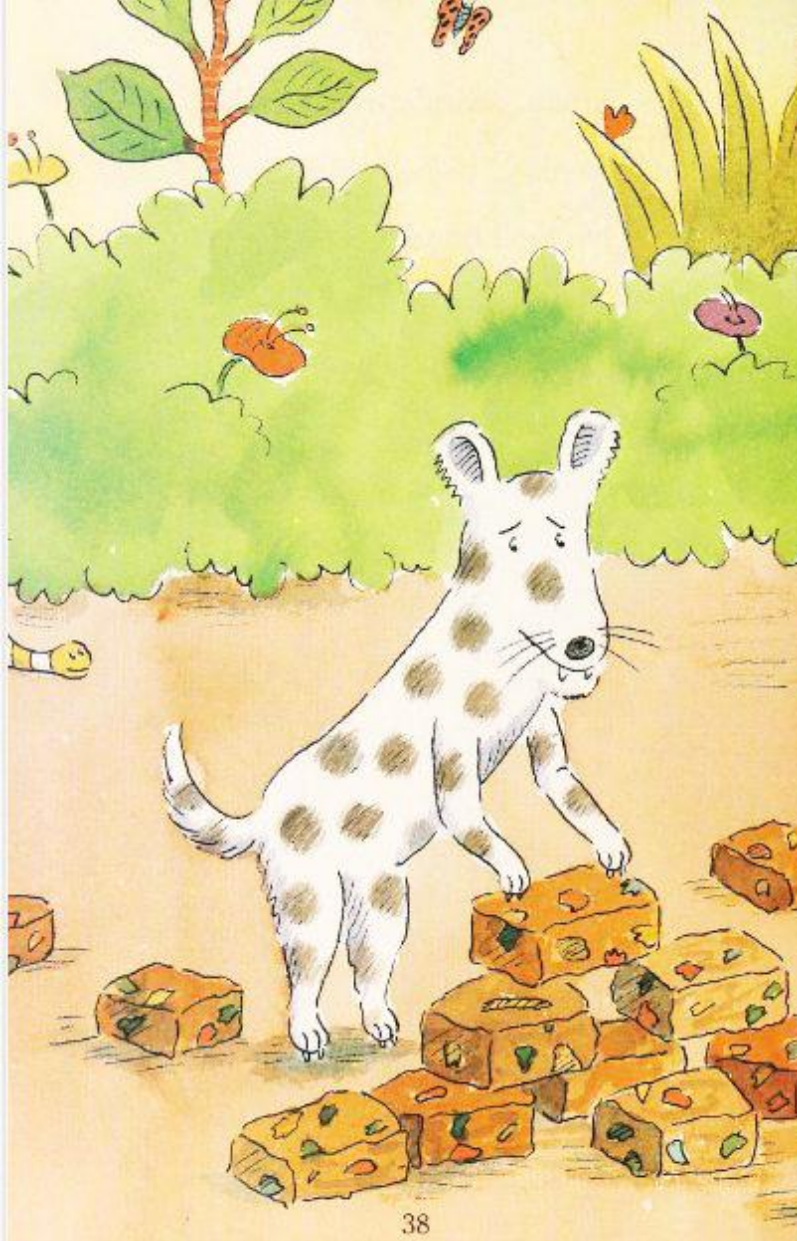
लकड़बग्घे ने समय बर्बाद नहीं किया.

उसने शाखों और टहनियों को इकट्ठा किया.

उसने बहुत सारी मिट्टी की ईंटें बनाईं.

लकड़बग्घे ने पूरे दिन तेज धूप में काम किया. ज़ेबरा बैठकर उसे बस देखता रहा.
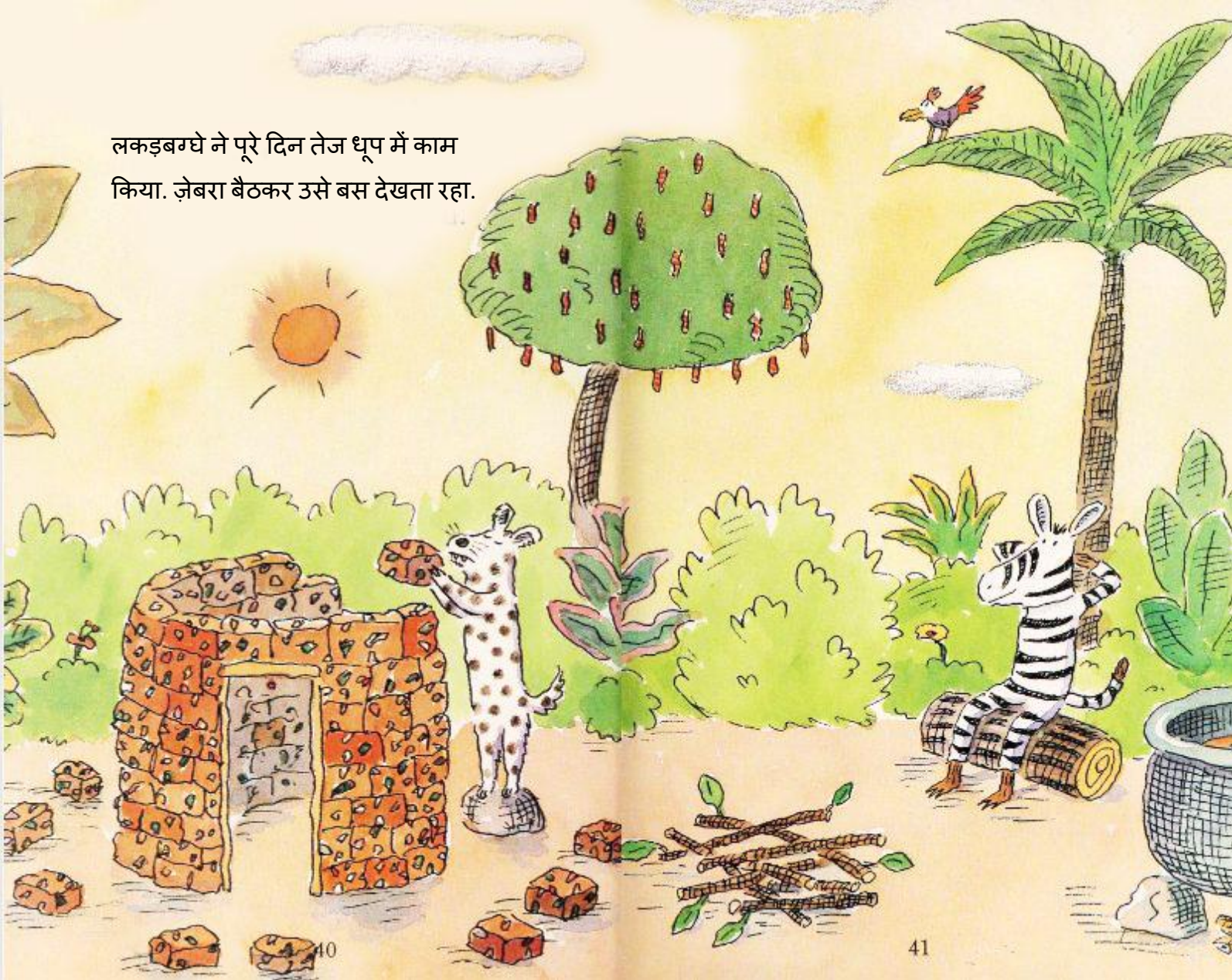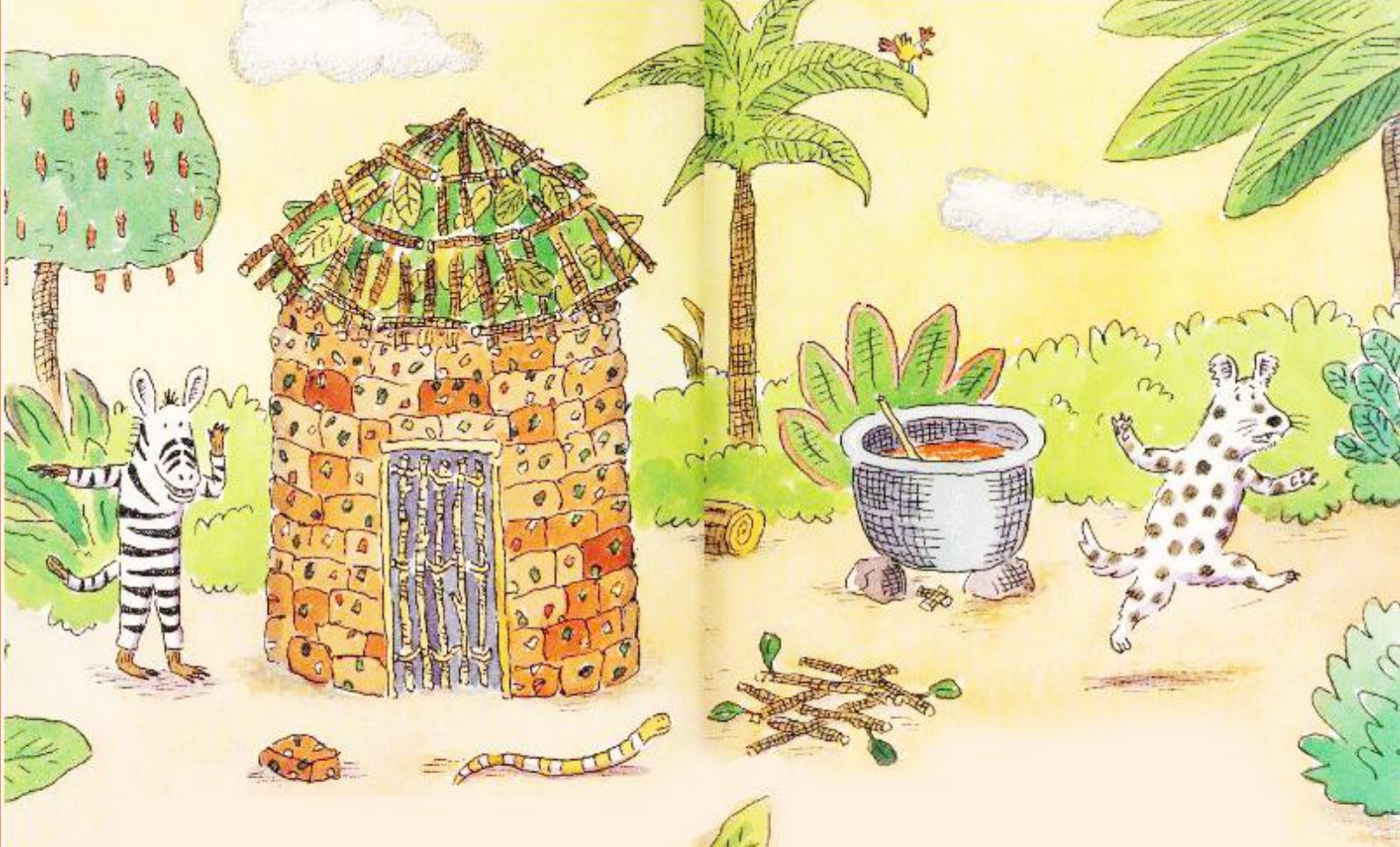
आखिर में घर बनकर तैयार हो गया.
"मैंने बंदर को अभी-अभी आते हुए सुना है!"
ज़ेबरा चिल्लाया.

लकड़बग्घा तुरंत झाड़ियों में भाग गया.
"बंदर से कहना मैं हमेशा के लिए दूर जा
रहा हूँ!" उसने रोते हुए कहा.

जैसे ही लकड़बग्घा गया, वैसे ही बंदर ने ज़ेबरा की खाल उतारकर फेंक दी. "चलो अब मेरे पास एक अच्छा नया घर तो है," उसने खुशी से कहा.
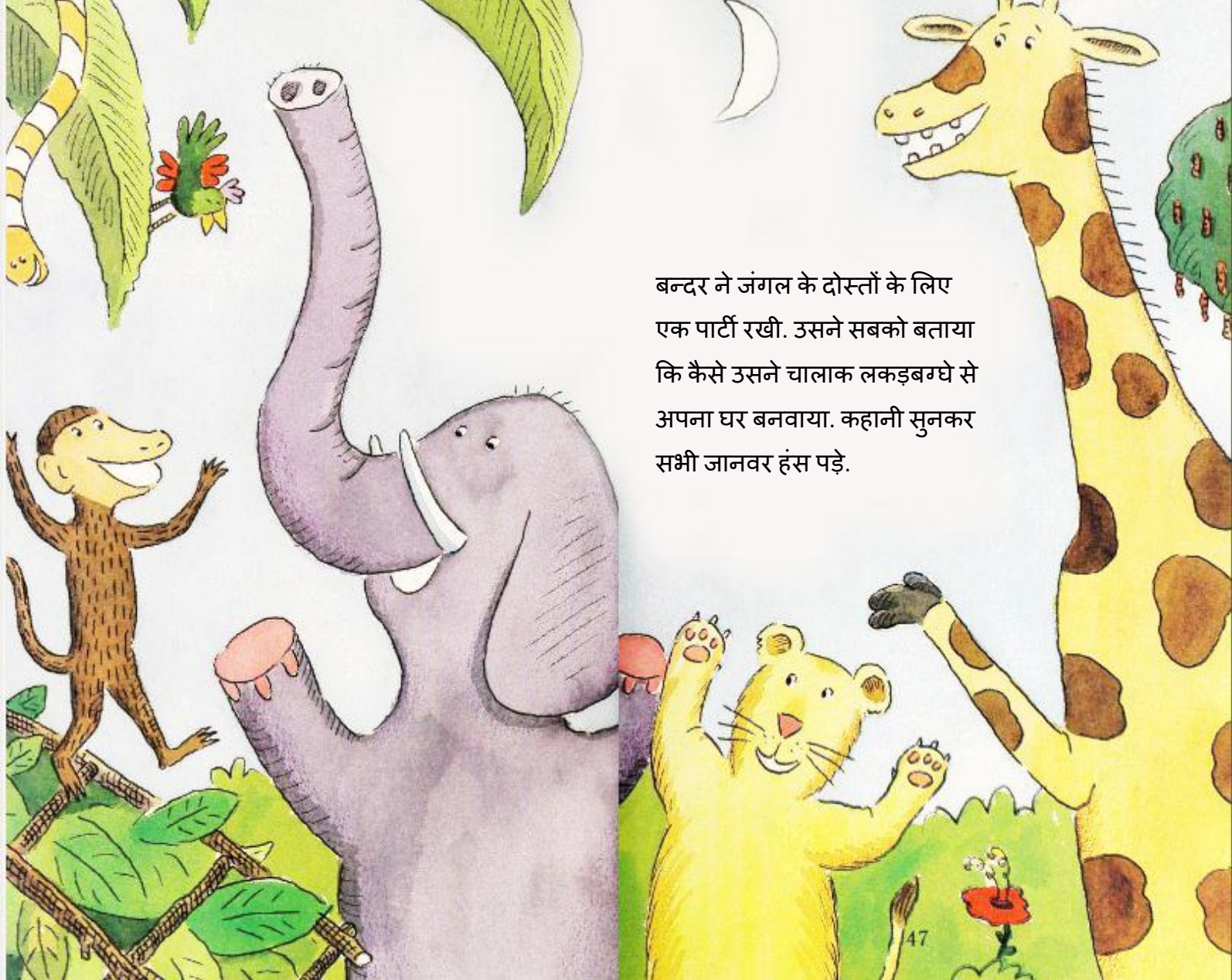
बन्दर ने जंगल के दोस्तों के लिए एक पार्टी रखी. उसने सबको बताया कि कैसे उसने चालाक लकड़बग्घे से अपना घर बनवाया. कहानी सुनकर सभी जानवर हंस पड़े.

फिर सब लोगों ने बैठकर
बड़े बर्तन का शोरबा खाया!

समाप्त